19

मुख्य पाठ्यचर्या
(Core Curriculum)

मुख्य पाठ्यचर्या

कोर-पाठ्यक्रम (Core-Curriculum)—कोर-पाठ्यक्रम उस पाठ्यक्रम को कहते हैं जिनमें कुछ विषय तो अनिवार्य होते हैं तथा अधिक विषय ऐच्छिक अनिवार्य विषयों का अध्ययन करना प्रत्येक बालक के लिए अनिवार्य होता है तथा ऐच्छिक विषयों को व्यक्तिगत रूचियों तथा क्षमताओं के अनुसार चुना जा सकता है। यह पाठ्यक्रम अमरीका की देन है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक बालक को व्यक्तिगत तथा सामाजिक दोनों प्रकार की समस्याओं के सम्बन्ध में ऐसे अनुभवा प्रदान किये करते है जिनके द्वारा वह अपने भावी जीवन में आने वाली प्रत्येक समस्या को सरलता पूर्वक सुलझाते हुए कुशल, तथा समाजोपयोगी एवं उत्तम नागरिक बन जाये। संक्षेप में कोर पाठ्यक्रम का लक्ष्य व्यक्ति तथा समाज दोनों का अधिक से अधिक विकास करना है। इस पाठ्यक्रम की कई विशेषतायें भी हैं। पहली विशेषता यह है कि इसके अन्तर्गत कई विषयों को एक साथ पढ़ाया जाता है। दूसरे, विभिन्न विषयों को पढ़ाने का समय निश्चित होता है। तीसरे, यह पाठ्यक्रम बाल-केन्द्रित है तथा चौथे, इसके द्वारा बालकों को कार्यों के द्वारा सामाजिक समस्याओं के सुलझाने का अभ्यास कराया जाता है।

गतिविधि आधारित पाठ्यचर्या

'समाज शिक्षा को जन्म देता है और शिक्षा समाज को इस कथन की व्यावहारिता तथा गहनता का विवेचन करने से विदित होता है कि शिक्षा की प्रक्रिया द्वारा नये समाज को जन्म दिया जाता है जैसा कि समाज भावी समाज की अपेक्षा करता है। शिक्षा प्रक्रिया द्वारा नये युवकों में ऐसे गुणों का विकास किया जाता है जिन गुणों की अपेक्षा की जाती है। शिक्षा एक विकास की प्रक्रिया है जिससे बालक का समग्र विकास किया जाता है। बालक के समग्र विकास के मुख्य पक्ष अधोलिखित होते हैं—

(1) शारीरिक विकास (Physical Development)

(2) मानसिक विकास (Mental Development)

(3) सामाजिक विकास (Social Development) तथा

(4) भावात्मक विकास (Emotional Development)।

शिक्षा की समस्त क्रियाओं द्वारा बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा भावात्मक पक्षों का सम्पूर्ण विकास किया जाता है। शिक्षा की प्रक्रिया में पाठ्यक्रम (Curriculum) का विशेष महत्व होता है। पाठ्यक्रम के व्यापक तथा संकुचित अर्थ होते हैं। संकुचित अर्थ में विद्यालयों के विभिन्न विषयों सम्बन्धी रूपरेखा को पाठ्यक्रम कहते हैं। विद्यालय के विषयों के शिक्षण से बालक के ज्ञानात्मक पक्ष का विकास अधिक होता है। भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षों का विकास नहीं हो पाता है। अत: इन पक्षों के विकास के लिये

अतिरिक्त क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। उन्हें अतिरिक्त-पाठ्यक्रम सहगामी क्रियायें (Extra-Curricular Activities) कहते हैं। परन्तु शिक्षा के लक्ष्यों की दृष्टि से पाठ्यक्रम तथा सहगामी क्रियाओं का समान महत्व है। अत: अब उन्हें पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं (Cocurricular Activities) की संज्ञा दी जाती है। इन सहगामी क्रियाओं द्वारा शारीरिक, सामाजिक तथा भावात्मक गुणों का विकास किया जा सकता है। अग्रलिखित चार्ट से शिक्षा प्रक्रिया के अंग तथा लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्रस्तुत किया गया है—

शिक्षा प्रक्रिया के अंग
(Aspects of Educational Process)

1. पाठ्यक्रम (Curriculum)
   - 1.1 ज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Domain)
   - 1.2 क्रियात्मक पक्ष (Conative Domain)
   - 1.3. भावात्मक पक्ष (Affective Domain)
     - मानसिक विकास (Mental Development)

2. पाठ्यक्रम सहगामी क्रियायें (Co-curricular Activities)
   - 2.1 शारीरिक विकास (Physical)
   - 2.2 सामाजिक विकास (Social)
   - 2.3. भावात्मक विकास (Emotional)

इस चार्ट से विदित होता है कि बालक के विकास की दृष्टि से पाठ्यक्रम की सहायता से मानसिक पक्ष का ही विकास किया जाता है और पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा शारीरिक, सामाजिक, तथा भावात्मक पक्षों का विकास क्रिया सकता है। पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का विशेष उपयोग होता है।

अत: इस अध्याय में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का विस्तार में विवेचन किया गया है।

पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के उद्देश्य
(Objectives of Co-curricular Activities)

पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का प्रमख उद्देश्यों की प्राप्ति करने में सहयोग प्रदान करना हैं प्रजातन्त्र समाज में इनका विशेष महत्व है। जिन गुणों का विकास पाठ्यक्रम की क्रियाओं द्वारा सम्भव नहीं होता है उनका विकास पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं द्वारा किया जाता है। इन क्रियाओं के उद्देश्यों इस प्रकार हैं—

(1) विद्यालय के सम्पूर्ण शैक्षिक कार्यक्रम एवं विद्यालय की चारित्रिक भावना को उन्नत बनाना।

(2) छात्रों को स्वशासन (Self-Government) तथा लोकतन्त्रीय प्रक्रियाओं के प्रयोग में बहुमूल्य अनुभव प्रदान करना जिससे वे कुशल लोकतन्त्रीय नागरिकता प्राप्त कर सकें।

(3) विभिन्न वातावरणों से आये बालकों में सहयोग एवं सह-अस्तित्व की भावना का विकास करना तथा उसको भावात्मक रूप से एक बनाना जिससे राष्ट्रीय एकता के मांग को प्रशस्त किया जा

(4) विद्यालय एवं समाज के पारस्परिक सम्बन्धों को उन्नत बनाना तथा समाज को विद्यालय के कार्यक्रमों में रूचि लेने के लिये प्रोत्साहन देना।

(5) बालकों के सर्वांगीण विकास में योगदान देना।

(6) बालकों को अपने अवकाश का सदुपयोग करने के लिए तैयार करना।

(7) छात्रों में सामाजिक गुणों का विकास करना जिससे वे अच्छे नागरिक बन सकें तथा समायोजन की क्षमताओं का विकास करना।

(8) छात्रों में भावात्मक गुणों का विकास करना जिससे अनुशासित नागरिक बन सकें।

पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से की जाती है।

पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से की जाती है।

पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की उपयोगिता
(Advantages of Co-curricular Activities)

विद्यालय की ये क्रियायें उसकी जीवन-शक्ति है। इनका बालकों के जीवन में बहुत महत्व है। क्योंकि उनके व्यक्तित्व के विकास में इनका बड़ा योगदान है। इन क्रियाओं द्वारा बालकों का शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं सामाजिक विकास होता है। इनके महत्व के विषय में माध्यमिक शिक्षा-आयोग का विचार है कि ये क्रियायें बालकों को अपने वैयक्तित्व गुणों, क्षमताओं तथा आत्मविश्वास को विकसित करने के लिए अवसर प्रदान करती है। इनके साथ ही ये अनुशासन एवं नेतृत्व के सहयोगी गुणों का बालकों में विकास करती हैं। इन क्रियाओं की उपयोगिता का विवेचन अधोलिखित है—

(अ) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का प्रयोग छात्रों के लिये कई रूप में किया जाता है—

(1) छात्रों में नवीन प्रकार की अभिरूचियों (Interests) के विकास के लिये अवसर तथा परिस्थितियाँ प्रदान करती हैं।

(2) छात्रों को नागरिकता के गुणों के विकास हेतु अनुभव प्रदान करते हैं तथा नेतृत्वों के गुणों का विकास किया जाता है।

(3) छात्रों के नैतिक मूल्यों के विकास के लिये परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाती हैं जिससे विद्यालय की नैतिकता का विकास होता है।

(4) इन क्रियाओं से छात्रों की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिये अवसर दिये जाते हैं।

(5) इन क्रियाओं से छात्रों को आध्यात्मिकता तथा नैतिक गुणों के विकास के लिये प्रोत्साहित किया जाता है।

(6) छात्रों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिये शक्ति प्रदान करते हैं तथा उनके समुचित विकास में सहायक होते हैं।

(7) छात्रों में समुचित तथा उत्तम सामाजिक विकास के लिये अवसर प्रदान किये जाते हैं जिससे वे अच्छे नागरिक बनते हैं।

(8) इन क्रियाओं से छात्रों के सम्पर्क का क्षेत्र व्यापक होता है तथा सहयोग की भावनाओं का विकास होता है।

(9) इन क्रियाओं में छात्रों की मौलिकता तथा सृजनात्मक क्षमताओं (Creativity) के समुचित विकास के लिये पर्याप्त अवसर प्रदान किये जाते हैं।

(10) छात्रों में प्रजातन्त्र के नागरिक के समुचित गुणो—अधिकार एवं कर्त्तव्य—का प्रशिक्षण तथा अभ्यास भी कराया जाता है।

(ब) विद्यालय के पाठ्यक्रम के उन्नत करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान होता है–

(1) कक्षा-शिक्षण के अनुभवों को ये क्रियायें उनमें वृद्धि करती है तथा सम्पूर्ण होती हैं।

(2) इन क्रियाओं की सहायता से नवीन अधिगमों के अनुभवों को प्रदान किया जाता है, वे छात्रों के लिये अधिक प्रभावी होते हैं। जैसे—शैक्षिक भ्रमणों से कक्षा-शिक्षण का ज्ञान अधिक सार्थक एवं सजीव हो जाता है।

(3) इन सहगामी क्रियाओं से प्रत्येक छात्र तथा समूह को अतिरिक्त निर्देशन के लिए अवसर दिया जाता है जिससे व्यक्तिगत एवं सामूहिक समस्या का समाधान मिलता है।

(4) इन सहगामी क्रियाओं से कक्षा-शिक्षण के अनुदेशन को पुनर्बलन (Reinforcement) मिलता है और छात्र कक्षा-शिक्षण में अधिक रूचि लेने लगते हैं।

(स) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं से विद्यालय प्रशासन सभा व्यवस्था को अधिक प्रभावशाली बनाया जाता है–

(1) इन क्रियाओं से छात्रों में सहयोग भावना विकसित की जाती है जिससे विद्यालय प्रशासन तथा निरीक्षण कार्य अधिक प्रभावी हो जाता है।

(2) इन क्रियाओं से अवकास के समय के सदुपयोग के गुणों का विकास हो जाता है। इससे विद्यालय प्रशासन की समस्यायें कम हो जाती हैं।

(3) इन क्रियाओं से शिक्षकों को अपने छात्रों को भली प्रकार समझने का अवसर मिलता है तथा छात्रों की प्रतिभाओं के सम्बन्ध में ज्ञान होता है। शैक्षिक-निर्देशन अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

(द) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियायें स्थानीय समुदाय के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करती हैं–

(1) इन क्रियाओं के सम्पादन से विद्यालय तथा समुदाय से अच्छे सम्बन्ध विकसित होते हैं तथा परस्पर सहयोगी की भावना भी विकसित होती है।

(2) इन सहगामी क्रियाओं से विद्यालय में समुदाय की अभिरूचियों को अधिक प्रोत्साहन मिलता है। विद्यालय तथा समुदाय में सहयोग की भावना विकसित की जाती है।